

لَنَسْأَلُوا الَّذِينَ تَشْتَرُونَ بِمَا تَشْتَرُونَ.
وَمَا تَشْتَرُونَ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (سورة آل عمران: 92)

ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com



إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي
الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ. فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ.
(سورة التوبة 60)

ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

www.najeebqasmi.com

All rights reserved
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

ज़कात और सद्कात के बारे में गाइडेंस Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat

By
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebgasmi.com/>
najeebgasmi@gmail.com
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

ः	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब	10
5	ज़कात के मसाइल	11
6	ज़कात के मानी	11
7	ज़कात का हुकुम	11
8	ज़कात की कब हुई	11
9	ज़कात के फवायद	12
10	ज़कात किस पर है	13
11	ज़कात का निसाब	13
12	ज़कात कितनी अदा करनी है	13
13	समाने तिजारत क्या क्या दाखिल है?	13
14	किस दिन की मालियत मोतबर होगी?	14
15	हर हर रुपये पर साल का गुज़रना ज़रूरी नहीं	14
16	ज़कात के हक़दार यानी ज़कात किस को अदा करें?	15
17	जिन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं है	15
18	ज़कात न निकालने पर वईद	16
19	ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद अलग मसाइल	17
20	सोने या चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात	19
21	ज़मीन की पैदावार ज़कात यानी उशर	27
22	उशर के मानी	30

23	निसाबे उशर	31
24	उशर और ज़कात फर्क	31
25	बटाई की ज़मीन का उशर	32
26	कटाई का और उशर	32
27	मुतफरिक् मसाइल	32
28	खेती की ज़कात के मुस्तहिक्कीन भी ज़कात के हकदार की तरह 8 हैं	33
29	अल्लाह हमसे हसन का मुतालबा करता है	34
30	हसन से क्या मुराद है	35
31	अल्लाह ने बन्दों की ज़रूरत करने को हसन से क्यों ताबीर किया?	36
32	हज़रत अबुल दहदा रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़या	37
33	हसन और अल्लाह के रास्ते करने की फज़ीलत	38
34	हसन और अल्लाह के रास्ता पसंदीदा खर्च करें	40
35	हसन या अल्लाह के रास्ते को बरबाद करने वाले असबाब	42
36	तंगदस्ती के वक़्त भी अल्लाह के रास्ते	43
37	लेखक का परिचय	47

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيمِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ.

प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ़ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ़ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ॥ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तकाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुम्सी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुहत्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुहत्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मकबूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तकरीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

ज़कात इस्लाम के बुनियादी पांच अरकान में से एक रुकन है। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सैकड़ों आयात में ज़कात की अदाएगी का हुकम फरमाया है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने इरशादात में ज़कात की अदाएगी की ताकीद और उसकी अहमियत ज़िक्र फरमाई है। मौजू की अहमियत के पेशे नज़र ज़कात और अल्लाह के रास्ते में खर्च के तुम्हल्लिक जरूरी मसायल इस किताब (ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस) में जमा कर दिए गए हैं।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उल्ला देवबन्द के मुहतमिम हज़रात मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.

(Mufti) Abul Qasim Nomani

Muslimah (MC) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.....

Date:.....

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تہم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے، دینی کام کرنے والوں کے لئے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توقعیں بنیں۔

ابو القاسم نعمانی

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۱۴۳۷ھ

مولانا محمد اسرار الحق قاسمی
Mohammad Asrarul Haque
Member of Parliament
(Lok Sabha)



1E, South Avenue, New Delhi, 110011
Ph: 811-23785046 Telefax: 011-23786314
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

تائراٹ

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے جب آئن انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و ایمان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں عزیزم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سرفہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ سادہ مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلا رہے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سے بنی ہوئی واقعہ ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم و دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعال و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعاگو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

مخلص

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی

ایم۔ بی۔ لوک-بھیا (انڈیا)

صدر آل انڈیا تعلیمی و ملی کارگزاری، نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

پرو. اخضرل واسے

آیوکت

PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner



सत्यमेव जयते

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دوچیلوں میں سما گئیں ہیں۔ اس نے ”گاہگر میں ساگر“ اور ”گھوڑے میں دریا“ کے تجزیاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنا دیا ہے بلکہ ان پر ہمارا احساس روز بروز گہرا ہو رہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل و ابلاغ کو وہ حصہ جسے رنج اور فرسائی تیزی عطا کی ہے کہ فراق و فاصل کے تمام تصورات بے معنی ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کر دیا ہے کہ اطلاعات رسائی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو سچ کرنے کا چیلن بھی اس طرح شامل ہو گیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا سنگین مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اس مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سما رہی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جانتا چاہتے ہیں۔ اس چیلنج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دبا کر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نئی نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعی انقلاب کے جتنے بھی وسائل و ذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موقر اور معتبر عالم حضرت دین مولا نا محمد نجیب قاسمی نے جواز ہر بند اور اہل علم و دینہ کے قابل فخر اپنے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدھانی ریاض میں برسر کار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو کوئی سمجھا اور دنیا کی کئی اسلامی موبائل ایپ ”دین اسلام“ اور ”چمبرز“ اردو، انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کر کے ایک وفد پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جا رہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالے سے دوسرے مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جا رہا ہے۔ مجھے واقعی قفا محترم مولا نا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے، الیکٹرونک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقع ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ انداز تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولا نا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہر یہ تحریک و تشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی و علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عشق کے استقاں اور بھی ہیں

استمیر

(پروفیسر اختر الواسع)

سابق ڈائریکٹر، ڈاکٹر حسین انیس ٹیٹ آف اسلامک اسٹڈیز
سابق صدر، شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ اسلامیہ دہلی
سابق وائس چیرمین، اردو اکادمی دہلی

ज़कात के मसाइल

ज़कात के मानी

ज़कात के मानी पाकीज़गी, बढ़ौतरी और बरकत के हैं। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया “उनके माल से ज़कात लो ताकि उनको पाक करे और बाबरकत करे उसकी वजह से और दुआ दे उनको।” (सूरह तौबा 103) शरई इस्तेलाह में माल के उस खास हिस्से को ज़कात कहते हैं जिसको अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक फकीरों, मोहताजों वगैरह को देकर उन्हें मालिक बना दिया जाए

ज़कात का हुकुम

ज़कात देना फर्ज़ है, कु़ल्लान करीम की आयात और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात से इसकी फर्ज़ियत साबित है। जो शख्स ज़कात के फर्ज़ होने का इंकार करे वह काफिर है

ज़कात की फर्ज़ियत कब हुई

ज़कात की फर्ज़ियत इब्तिदाए इस्लाम में ही मक्का के अंदर नाज़िल हो चुकी थी जैसा कि इमाम तफसीर इब्ने कसीर ने सूरह मुज़ज़म्मिल की आयत से इस्तिदालाल फरमाया है। क्योंकि यह सूरत मक्की है और बिल्कुल इब्तिदाए वही के ज़माने की सूरतों में से है, अलबत्ता अहादीस से मालूम होता है कि इब्तिदाए इस्लाम में ज़कात के लिए कोई खास निसाब या खास मिकदार मुकर्रर न थी बल्कि जो कुछ एक मुसलमान की अपनी ज़रूरत से बच जाता उसका एक बड़ा

हिस्सा अल्लाह की राह में खर्च किया जाता था। निसाब का तअय्युन और ज़कात की मिक़दार का बयान मदीना में हिजरत के बाद हुआ।

ज़कात के फवायद

ज़कात एक इबादत है, अल्लाह का हुकुम है, ज़कात निकालने से हमें कोई मंफअत हासिल हो या न हो, कोई फायदा मिले या न मिले, अल्लाह के हुकुम की इताअत बज़ाते खुद मकसूद है, असल मकसद तो ज़कात का यह है, लेकिन अल्लाह का करम है जो कोई बन्दा ज़कात निकालता है तो अल्लाह उसको दुनियावी फवायद भी अता फरमाते हैं, उन फवायद में से यह भी है कि ज़कात की अदाएँ बाक़ी माल में बरकत, इज़ाफा और पाकीज़गी का सबब बनती है।

चुनांचे कुरान करीम (सूरह बक्रह 276) में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया “अल्लाह सूद को मिटाता है और ज़कात और सदक़ात को बढ़ाता है।”

एक हदीस में उम्हूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब कोई बन्दा ज़कात निकालता है तो फरिशते उसके हक़ में दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! जो शख्स अल्लाह के रास्ते में खर्च कर रहा है उसको और ज़्यादा अता फरमा और ऐ अल्लाह! जिस शख्स ने अपने माल को रोक कर रखा है और ज़कात अदा नहीं कर रहा है तो ऐ अल्लाह उसके माल पर हलाकत डाले।

एक हदीस में उम्हूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कोई सदका किसी माल में कमी नहीं करता है।

ज़कात किस पर फर्ज़ है?

उस मुसलमान आक़िल बालिग़ पर ज़कात फर्ज़ है जो साहबे निसाब हो। निसाब का अपनी ज़रूरतों से ज़्यादा और क़र्ज़ से बचा हुआ होना शर्त है, नीज़ माल पर एक साल गुज़रना भी ज़रूरी है, लिहाज़ा मालूम हुआ कि जिसके पास निसाब से कम माल है या माल तो निसाब के बराबर है लेकिन वह क़र्ज़दार भी है या माल सालभर तक बाकी नहीं रहा तो ऐसे शख्स पर ज़कात फर्ज़ नहीं है।

ज़कात का निसाब

52.5 तोला यानी 512.36 ग्राम चांदी या 7.5 तोला सोना या उसकी कीमत का नक़द रूपया या ज़ेवर या सामाने तिजारत वगैरह जिस शख्स के पास मौजूद है और उस पर एक साल गुज़र गया है तो उसको साहबे निसाब कहा जाता है। औरतों के इस्तेमाली ज़ेवर में ज़कात के फर्ज़ होने में उलमा की राय मुख़्तलिफ़ हैं। चूँकि ज़कात की अदाएगी न करने पर क़ुरान व हदीस में सख़्त वर्इदें आई हैं लिहाज़ा इस्तेमाली ज़ेवर पर भी ज़कात अदा करनी चाहिए।

ज़कात कितनी अदा करनी है?

ऊपर ज़िक्र किए गए निसाब पर सिर्फ़ ढाई फीसद (2.5%) ज़कात अदा करनी ज़रूरी है।

समाने तिजारत में क्या क्या दाखिल है?

माले तिजारत में हर वह चीज़ शामिल है जिसको आदमी ने बेचने की गरज़ से खरीदा हो, लिहाज़ा जो लोग इन्वेस्टमेंट की गरज़ से

प्लाट खरीद लेते हैं और शुद्ध ही से यह नियत होती है कि जब अच्छे पैसे मिलेंगे तो उसको बेच करके उससे नफा कमाएंगे, तो उस प्लाट की मालियत पर भी ज़कात वाजिब है। लेकिन प्लाट इस नियत से खरीदा कि अगर मौका हुआ तो उस पर रिहाइश के लिए मकान बनवा लेंगे या मौका होगा तो उसको किराया पर चढ़ा देंगे या कभी मौका होगा तो उसको बेच देंगे, यानी कोई वाज़ेह नियत नहीं है बल्कि वैसे ही खरीद लिया तो इस सूरत में इस प्लाट की कीमत पर ज़कात वाजिब नहीं है।

किस दिन की मालियत मोतबर होगी?

ज़कात की अदाएगी के लिए उस दिन की कीमत का एतेबार होगा जिस दिन आप ज़कात की अदाएगी के लिए अपने माल का हिसाब लगा रहे हैं।

हर हर रुपये पर साल का गुज़रना ज़रूरी नहीं

एक साल माल पर गुज़र जाए इसका मतलब यह नहीं कि हर साल हर हर रुपये पर मुस्तक़िल साल गुज़रे, यानी गुज़श्ता साल रमज़ान में अगर आप 5 लाख रुपये के मालिक थे जिस पर एक साल भी गुज़र गया था, ज़कात अदा कर दी गई थी, इस साल रमज़ान तक जो रक़म आती जाती रही उस का कोई एतेबार नहीं, बस इस रमज़ान में देख लो कि तुम्हारे पास अब कितनी रक़म ज़रूरियात से बच गई है और उस रक़म पर ज़कात अदा कर दो, मसलन इस रमज़ान में छः लाख रुपये आपके पास ज़रूरियात से बच गए तो छ लाख का 2.5% ज़कात अदा कर दो।

ज़कात के हक़दार यानी ज़कात किस को अदा करें?

अल्लाह तआला ने सूरह तौबा आयत 60 में 8 तरह के आदमियों को ज़कात का हक़दार बताया है।

- 1) फ़कीर यानी वह शख्स जिसके पास कुछ थोड़ा माल व असबाब है, लेकिन निसाब के बराबर नहीं।
- 2) मिसकीन यानी वह शख्स जिसके पास कुछ भी न हो।
- 3) जो लोग ज़कात वसूल करने पर मुतअय्यन हैं।
- 4) जिनकी दिलजोई करना मंज़ूर हो।
- 5) वह गुलाम जिसकी आज़ादी मतलूब हो।
- 6) कर्ज़दार यानी वह शख्स जिसके ज़िम्मे लोगों का कर्ज़ हो और उसके पास कर्ज़ से बचा हुआ बक़दरे निसाब कोई माल न हो।
- 7) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला।
- 8) मुसाफ़िर जो हालते सफ़र में तंगदस्त हो गया हो।

वज़ाहत - इस आयत में अगरचे सदका का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है, मगर कुरान करीम की दूसरी आयात व नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल की रौशनी में मुफ़स्सेरीन ने लिखा है कि यहां सदका से मुराद ज़कात है।

जिन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं है

- 1) उस शख्स को जिसके पास ज़रूरियाते असलिया से ज़ायद बक़दरे निसाब माल मौजूद है।

2) सैयद और बनी हाशिम, बनी हाशिम से हज़रत हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब, हज़रत जाफर, हज़रत अक्रील, हज़रत अब्बास और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम की औलाद मुराद है।

3) अपने मां, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी को ज़कात देना जाएज़ नहीं है।

4) अपने बेटे, बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी को ज़कात देना जाएज़ नहीं है।

5) शौहर अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को ज़कात नहीं दे सकती है।

6) काफिर को ज़कात नहीं दी जा सकती है।

नोट - भाई, बहन, भतीजा, भतीजी, भांजा, चाचा, फूफी, खाला, मामू, सास, ससुर, दामाद वगैरह में से जो हाज़तमंद और मुस्तहिक ज़कात हों उन्हें ज़कात देने में दोहरा सवाब मिलता है, एक सवाब ज़कात का और दूसरा सिला रहमी का। किसी तोहफा या हदया के उनवान से भी इन मज़कूर रिश्तेदार को ज़कात दी जा सकती है।

ज़कात न निकालने पर वईद

सूरह तौबा आयत 34-35 में अल्लाह तआला ने उन लोगों के लिए बड़ी सख्त वईद बयान फरमाई है जो अपने माल की ज़कात नहीं निकालते। उनके लिए बड़े सख्त अल्फाज़ में खबर दी है, ज़ुब्बांचे फरमाया कि जो लोग अपने पास सोना चांदी जमा करते हैं और उसको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते तो (ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप उनको एक दर्दनाक अज़ाब की खबर दे दीजिए, यानी जो लोग अपना पैसा रुपया अपना सोना चांदी जमा

करते जा रहे हैं और उनको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते उन पर अल्लाह ने जो फरीज़ा आयद किया है उसको अदा नहीं करते, उनको खुशखबरी सुना दीजिए कि एक दर्दनाक अज़ाब उनका इंतेजार कर रहा है।

फिर दूसरी आयत में उस दर्दनाक अज़ाब की तफसील ज़िक्र फरमाई कि यह दर्दनाक अज़ाब उस दिन होगा जिस दिन सोने और चांदीको आग में तपाया जाएगा और फिर उस आदमी की पेशानी, उसके पहलू और उसकी पुशत को दागा जाएगा और उससे यह कहा जाएगा कि यह है वह खज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था, आज तुम खज़ाने का मज़ा चखो जो तुम अपने लिए जमा कर रहे थे। अल्लाह तआला हम सबको इस अंजामे बद से महफूज़ फरमाए, आमीन।

एक हदीस में नबी अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब माल में ज़कात की रकम शामिल हो जाए यानी पूरी ज़कात नहीं निकाली बल्कि कुछ ज़कात निकाली और कुछ रह गई तो वह माल इंसान के लिए तबाही और हलाकत का सबब है, लिहाज़ा इस बात का एहतेमाम करो कि एक एक पाई का सही हिसाब करके ज़कात अदा करो।

ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद अलग मसाइल

ज़कात जिसको दी जाए उसे यह बताना कि यह माल ज़कात है ज़रूरी नहीं बल्कि किसी गरीब के बच्चों को ईदी या किसी और नाम से दे देना भी काफी है।

दीनी मदारिस में गरीब तालिब इल्म के लिए ज़कात देना जाएज़ है।

ज़कात की रक़म मसाजिद, मदारिस, अस्पताल, यतीमखाने और मुसाफिर खाने की तामीर में खर्च करना जाएज़ नहीं है।
अगर औरत भी साहबे निसाब है तो उसपर भी ज़कात फर्ज़ है, अलबत्ता शौहर खुद ही औरत की तरफ से भी ज़कात की अदाएगी अपने माल से कर दे तो ज़कात अदा हो जाएगी।

सोने या चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात

हज़रत उमर फारूक, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अलआस रज़ियल्लाहु अन्हुम इसी तरह मशहूर व मारूफ ताबेईन हज़रत सईद बिन जुबैर, हज़रत अता, हज़रत मुजाहिद, हज़रत इब्ने सीरीन, इमाम जुहरी, इमाम सौरी, इमाम औज़ाई और इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैहिम कुरान व सुन्नत की रौशनी में औरतों के सोने या चांदी के इस्तेमाली ज़ेवर पर वजूब ज़कात के कायल हैं अगर वह ज़ेवर निसाब के बराबर या ज़ायद हो और उस पर एक साल भी गुज़र गया हो, जिसके मुख्तलिफ दलाइल पेश किए जाते हैं।

1) कुरान व सुन्नत के वह उम्मी हुकुम जिनमें सोने या चांदी पर बेगैर किसी (इस्तेमाली या गैर इस्तेमाली) शर्त के ज़कात वाजिब होने का ज़िक्र है और इन आयात व अहादीसे शरीफा में ज़कात के अदाएगी में कोताही करने पर सख्त तरीन वईदें वारिद हुई हैं। बहुत सी आयात व अहादीस में यह उम्म मिलता है, इख्तिसार की वजह से सिर्फ एक आयत और एक हदीस पर इकतिफा करता हूँ

“जो लोग सोना या चांदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाहकी राह में खर्च नहीं करते (यानी ज़कात नहीं निकालते) सो आप उनको एक बड़े दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दीजिए जो कि उस रोज़ वाक़े होगी कि उन (सोना व चांदी) को दोज़ख की आग में तपाया जाशा फिर उनसे लोगों की पेशानियाँ और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग दिया जाएगा और यह जतलाया जाएगा कि यह वह है

जिसको तुम अपने वास्ते जमा करके रखते थे, सो अब अपने जमा करने का मजा चखो।” (सूरह तौबा 34, 35)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस माल की ज़कात अदा कर दी जाए वह “कनज़तुम” (जमा किए हुए) में दाखिल नहीं है। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद) गरज़ ये कि जिस सोने व चांदी की ज़कात अदा नहीं की जाती कल क़यामत के दिन वह सोना व चांदी जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उनकी पेशानियों, पहलुओं और पुश्तों का दागा जाएगा। अल्लाह तआला हम सबको तमाम माल और सोने व चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात की अदाएगी करने वाला बनाए ताकि इस दर्दनाक अज़ाब से हमारी हिफाज़त हो जाए (आमीन)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कोई शख्स जो सोने या चांदी का मालिक हो और उसका हक़ (यानी ज़कात) अदा न करे तो कल क़यामत के दिन उस सोने व चांदी के पतरे बनाए जाएंगे और उनको जहन्नम की आग में ऐसा तपाया जाएगा गोया कि वह खुद आग के पतरे हैं, फिर उससे उस शख्स का पहलू, पेशानी और कमर दाग दी जाएगी और क़यामत के पूरे दिन में जिस की मिक्कदार पचास हज़ार साल होगी बार बार इसी तरह तपा तपा कर दाग दिए जाते रहेंगे यहां तक कि उनके लिए जन्नत या जहन्नम का फैसला हो जाए।

इस आयत और हदीस में आम तौर पर सोने या चांदी पर ज़कात की अदाएंगी न करने पर दर्दनाक अज़ाब की ख़बर दी गई है चाहे वह इस्तेमाली ज़ेवर हों या तिजारती सोना व चांदी। गरज़ ये कि कुरान करीम में किसी एक जगह भी इस्तेमाली ज़ेवर का इस्तिस्ना नहीं किया गया है।

2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक औरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुई, उसके साथ उसकी बेटी थी जो दो सोने के भारी कंगन पहने हुए थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस औरत से कहा कि क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? उस औरत ने कहा नहीं, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम चाहती हो कि अल्लाह तआला इनकी वजह से कल क़यामत के दिन आग के कंगन तुम्हें पहनाए, तो उस औरत ने वह दोनों कंगन उतार कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए पेश कर दिए। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, दारे कुत्नी) शारेह मुस्लिम इमाम नववी और शैख नासिरुद्दीन अलबानी ने इस हदीस को सही करार दिया है।

3) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाए और मेरे हाथ में छल्ला देख कर मुझसे कहा कि ऐ आइशा! यह क्या है? मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! यह मैंने आपके लिए ज़ीनत हासिल करने की

गरज़ से बनवाया है, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? मैंने कहा नहीं, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तो फिर यह तुम्हें जहन्नम में ले जाने के लिए काफी है। (अबूदाऊद जिल्द 1 पेज 244, दारे कुतनी)

मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने हदीस को सही करार दिया है। इमाम खत्ताबी ने (मआलिमुस सुनन जिल्द 3 पेज 176) में ज़िक्र किया है कि गालिब गुमान यह है कि छल्ला तन्हा निसाब को नहीं पहुंचता है, इसके मानी यह हैं कि इस छल्ले को बूरे ज़ेवरात में शामिल किया जाए, निसाब को पहुंचने पर ज़कात की अदाएगी करनी होगी। इमाम सुफयान सौरी ने भी यही तौजीह ज़िक्र की है।

4) हज़रत असमा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि मैं और मेरी खाला नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुईं, हमने सोने के कंगन पहन रखे थे, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? हमने कहा नहीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम डरती नहीं कि कल क़यामत के दिन अल्लाह तआला इनकी वजह से आग के कंगन तुम्हें पहनाए? लिहाज़ा इनकी ज़कात अदा करो। (मुसनद अहमद) मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने हदीस को सही करार दिया है। बहुत सी अहादीस में ज़ेवरात के वाजिब होने का ज़िक्र है, यहां तियालत से बचने के लिए सिर्फ़ तीन अहादीस ज़िक्र की गई हैं।

इस्तेमाली ज़ेवर में ज़कात वाजिब न करार देने वाला उम्मत मुस्लिमा का दूसरा मक्तबे फिक्र उमूमन दो दलीलें पेश करता है।

1) अक्ली दलील - अल्लाह तआला ने उसी माल में ज़कात को वाजिब करार दिया है जिसमें बढ़ोतरी की गुनजाइश हो, जबकि सोने और चांदी के ज़ेवरात में बढ़ोतरी नहीं होती है। हालांकि हक्कीतन ज़ेवरात में भी बढ़ोतरी होती है, ज़ुआंचे सोने की कीमत के साथ ज़ेवरात की कीमत में भी इज़ाफा होता है, आज कल तो तिजारतसे ज़्यादा मार्जिन (Margin) सोने में मौजूद है।

2) चंद अहादीस व आसारे सहाबा - वह सबके सब ज़ईफ हैं जैसाकि शैख नासिरुद्दीन ने अपनी किताब (अरवाउल गलील) में दलाइल के साथ लिखा है।

बर् सगीर के जमहूर उलमाए किराम ने कुरान व हदीस की रौशनी में यही लिखा है कि इस्तेमाली ज़ेवरात में निसाब को पहुंचने पर ज़कात वाजिब है। सउदी अरब के साबिक मुफती आम शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ की भी कुरान व सुन्नत की रौशनी में यही राय है कि इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात वाजिब है।

(उसूली बात) मौजूए बहस मसअला में उम्मत मुस्लिमा ज़मानए कदीम से दो मकातिबे फिक्र में मुक़सिम हो गई है, हर मक्तबे फिक्र ने अपने मौक़िफ की ताईद के लिए अहादीसे नबविया से ज़रूर सहारा लिया है, लेकिन इस हकीकत का कोई इंकार नहीं कर सकता कि कुरान करीम में जहां कहीं भी सोने या चांदी पर ज़कात की अदाएगी न करने पर सख्त वईदें वारिद हुई हैं किसी एक जगह भी इस्तेमाली या तिजारती सोने में कोई फर्क नहीं किया गया, हनीज़

इस्तेमाली ज़ेवर को ज़कात से मुस्तसना करने के लिए कोई गैर काबिले नक़द व जरह हदीस के ज़खीरे में नहीं मिलती है, बल्कि बाज़ अहादीस सहीहा इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात वाजिब होने की वाज़ेह तौर पर रहनुमाई कर रही है। शैख नासिरुद्दीन अलबानी जैसे मुहद्दिस ने भी इनमें बाज़ अहादीस को सही तसलीम किया है, नज़्म इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात के वाजिब करार देने के लिए अगर कोई हदीस न भी हो तो कुरान करीम के उम्मी हुकुम की रौशनी में हमें हर तरह के सोने व चांदी पर ज़कात अदा करनी चाहिए चाहे इसका तअल्लुक इस्तेमाल से हो या नहीं, ताकि कल क़यामत के दिन रुसवाई, ज़िल्लत और दर्दनाक अज़ाब से बच सकें । नीज़ इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात के वाजिब करार देने में गरीबों, मिसकीनों, स्त्रीमाँ और बेवाओं का फायदा है, ताकि चंद घरों में न सिमटे बल्कि हम अपने मुआशरे को इस रक़म से बेहतर बनाने में मदद हासिल करें।

(एहतियात) वह मज़कूरा बाला अहादीस जिनमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्तेमाली ज़ेवर पर भी वुजूबे ज़कात का हुकुम दिया है उनके सही होने पर मुहद्दिसीन की एक जमाअत मुत्तफ़िक हैं, अलबत्ता बाज़ मुहद्दिसीन ने सनदे हदीस में ज़ोफ़ का इकरार किया है। लेकिन एहतियात इसी में है कि हम इस्तेमाली ज़ेवर पर भी ज़कात की अदाएंगी करें, ताकि ज़कात की अदाएंगी न करने पर कुरान व हदीस में जो सख़्त तरीन वईदें आई हैं उनसे हमारी हिफाज़त हो सके, नीज़ हमारे माल में पाकीज़गी के स्ल्लाह उसमें बढ़ोतरी उसी वक़्त पैदा होगी जब हम ज़कात की पूरी अदाएंगी करेंगे, क्योंकि ज़कात की पूरी अदाएंगी न करने पर माल की

पाकीज़गी और बढ़ोतरी का वादा नहीं है। नीज़ जो बाज़ सहाबा या ताबेईन इस्तेमाली ज़ेवर में ज़कात के वुजूब के कायल नहीं थे उनकी ज़िन्दगियों के अहवाल पढ़ने से मालूम होता है कि वह तो अपनी ज़रूरियात के मुकाबले में दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने में अपनी दुनिया व आखिरत की कामयाबी समझते थे और अपने माल का एक बड़ा हिस्सा अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करते थे। तारीखी किताबें ऐसे वाक्यात से भरी हुई हैं। इस वक़्त उम्मत मुस्लिमा का बड़ा तबका ज़कात की अदाएगी के लिए भी तैयार नहीं है चेजाएकि दूसरे सदकात व ख़ैरात व तआवुन से अपने गरीब भाईयों की मदद करे, लिहाज़ा इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात निकालने में ही एहतिम्त है, ताकि हम दुनिया में गरीबों, यतीमों और बेवाओं की मदद करके कल क़यामत के दिन न सिर्फ़ अज़ाब से बच सकें , बल्कि अजरे अज़ीम के भी मुस्तहिक़ बनें।

(चंद वजाहतें) अगर ज़ेवरात इस्तेमाल के लिए नहीं हैं बल्कि मुस्तक़बिल में किसी तंग वक़्त में काम आने (मसलन बेटी की शादी) के लिए रखे हुए हैं या साल से ज़्यादा हो गया और उनका इस्तेमाल भी नहीं हुआ तो इस सूरत में सोने के ज़ेवरात पर ज़कात के वाजिब होने पर तक़रीबन तमाम उलमाए किराम का इत्तिफ़ाक़ है यानी उम्मत मुस्लिमा का दूसरा मक़तबे फ़िक़् भी मुत्तफ़िक़् है। ज़ेवरात की ज़कात में ज़कात की अदाएगी के वक़्त सोने के बेचने की कीमत का एतेबार होगा, यानी आपके पास जो सोना मौजूद है अगर इसको मार्केट में बेचें तो वह कितने में खरोख़्त होगा, इस कीमत के एतेबार से ज़कात अदा करनी होगी।

डायमान्ड पर ज़कात वाजिब न होने पर उम्मतु मुस्लिमा मुत्तफिक हैं, क्योंकि शरीअते इस्लामिया ने इसको कीमती पत्थरों में ग़ु़शार किया है। हां अगर यह तिजारत की गरज़ के लिए हों तो फिर निसाब के बराबर या ज़्यादा होने की सूरत में ज़कात वाजिब होगी।

अगर किसी शख्स के पास सोने या चांदी के अलावा नक़दी या बैंक बैलेंस भी है तो उन पर भी ज़कात अदा करनी होगी, अलबत्ता ये बुनियादी शर्तें हैं:

- 1) निसाब के बराबर या ज़ायद हो।
- 2) एक साल गुज़र गया हो।

ज़मीन की पैदावार में ज़कात यानी उशर

खालिके कायनात की नेमतों में से एक बड़ी नेमत ज़मीन की तखलीक है जिसमें अल्लाह तआला के हुकुम से बेशुमार अनाज, फल फूल, सब्जियां और तरह तरह की नबातात पैदा होती हैं जिनके बौर इंसान ज़िन्दा नहीं रह सकता। यह महज़ अल्लाह तआला का फज़ल व करम व एहसान है कि उसने ज़मीन को इंसान के ताबे बना दिया और उसमें क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों की रोज़ी का अज़ीम ज़खीरा जमा कर दिया।

अल्लाह तआला ने मिट्टी को पैदावार के क़ाबिल बनाया और पैदावार के उगने और उसके नश व नुमा के लिए बादलों से पानी बरसा कर, पहाड़ों से चशमे बहा कर और ज़मीन के अंदर पानी के ज़खीरे रख कर वाफिर मिक़दार में पानी पैदा कर दिया, नीज़ हवा के इत्ज़ाम के साथ रौशनी व गर्मी का खास नज़्म किया ताकि ताम इंसान व जिन्नात और जानदार ज़मीन की पैदावार से भरपूर फायदा उठाकर ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारते रहें।

यकीनन ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले ही ने ज़मीन से पैदावारी का यह सारा इन्तेज़ाम किया है। अल्लाह तआला कुरान करीम में इरशाद फरमाता है **अच्छा यह बताओ कि जो कुछ तुम ज़मीन में बोते हो, क्या उसे तुम उगाते हो या उगाने वाले हम हैं।**” (सूरह वाक़्या 63) यानी तुम्हारा काम बस इतना ही तो है कि तुम ज़मीन में बीज डाल दो और मेहनत करो, इस बीज को परवान चढ़ा कर कोपल की शकल देना और इसे दरख़्त या पौदा बना देना और

इसमें तुम्हारे फायदे के फल या गल्ले पैदा करना क्या तुम्हारे अपने बस में था? अल्लाह तआला के सिवा कौन है जो तुम्हारे डाले हुए बीज को यहां तक पहुंचा देता है।

यकीनी तौर पर ज़मीन की पैदावार का हर हर दाना अल्लाह तआला की अज़ीम नेमत है और हकीकी पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, इंसान तो अल्लाह की अज़ीम नेमतों (मिट्टी को पैदावार के काबिल बनाना, हवा, गर्मी व सर्दी और रौशनी का इंतज़ाम वगैरह) से फायदा उठाए बेगैर ए तिनका भी ज़मीन से नहीं उगा सकता, इस अज़ीम नेमत पर हर शख्स को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने इस ज़मीन से हमारे लिए उम्दा उम्दा गिज़ाओं का इंतज़ाम किया। शरीअते इस्लामिया ने इज़हारे तशक्कुर का यह तरीका बताया है कि ज़मीन की हर पैदावार पर उशर या निस्फ उशर (दसवां या बीसवां हिस्सा) यानी दस या पांच फीसद ज़कात निकालें ताकि गरीब और मोहताजों की ज़रूरतों की तकमिल हो सके।

पैदावार की ज़कात के मुतअल्लिक अल्लाह तआला कुरान करीम में इरशाद फरमाता है “अल्लाह वह है जिसने बागात पैदा किए जिनमें से कुछ (बेलदार हैं जो) सहारों से ऊपर चढ़ाए जाते हैं और कुछ सहारों के बेगैर बुलंद होते हैं और नखलिस्तान और खेतियां पैदा कीं, जिनके ज़ायके अलग अलग हैं और ज़ैतून और अनार पैदा किए जो एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और एक दूसरे से मुख्तलिफ भी। जब यह दरख्त फल दे तो उनके फलों को खाने में इस्तेमाल करो

और जब उनकी कटाई का दिन आए तो अल्लाह का हक़ अदा करो और फुज़ूलखर्ची न करो। याद रखो वह फुज़ूलखर्च लोगों को पसंद नहीं करता।” (सूरह अनआम 141)

इसी तरह अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है “ऐ ईमान वाले जो कुछ तुमने कमाया हो और जो पैदावार हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली हो उसकी अच्छी चीज़ों का एक हिस्सा (अल्लाह के रास्ते में) खर्च किया करो और यह नियत न रखो कि बस ऐसी खराब किस्म की चीज़ें (अल्लाह के नाम पर) दिया करोगे जो (अगर वेई दूसरा तुम्हें दे तो नफरत के मारे) तुम उसे आंखें मीचे बेगैर न ले सको। और याद रखो कि अल्लाह बेनियाज़ है और क़ाबिले तारीफ़ है।” (सूरह बकरह 267)

कुरान करीम के पहले मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो ज़मीन दरया और बादल से सींची जाए उसकी पैदावार का दसवां हिस्सा और जो ज़मीन कुएं से सींची जाए उसकी पैदावार का बीसवां हिस्सा (ज़कात के तौर पर निकाला जाए)।

क़यामत तक आने वाली सारी इंसानियत के नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो ज़मीन आसमान, चशमा और तालाब के पानी से सींची जाए उसकी पैदावार का दसवां हिस्सा और जो ज़मीन में डोल या रहट के ज़रिया सींची जाए उसकी पैदावार का बीसवां हिस्सा (ज़कात के तौर पर निकाला जाए)।

कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक़ है कि ज़मीन की पैदावार पर दसवां या बीसवां हिस्सा (दस या पांच फीसद)

ज़कात में देना ज़रूरी है अगरचे इसकी तफसीलात में कुछ इख्तेलाफ हैं। (बदाये सनाये) शैख इब्ने कुदामा ने अपनी किताब “अलमुगनी” में लिखा है कि ज़मीन की पैदावार में ज़कात के वुजूब के सिलसिले में उम्मत मुस्लिमा के दरमियान कोई इख्तिलाफ ही नहीं है।

उशर के मानी

उशर के असल मानी दसवें हिस्से के हैं, लेकिन बुख़र अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पैदावार की ज़कात के मुतअल्लिक जो तफसीर बयान फरमाई है उसमें ज़मीन की दो किस्में करार दी हैं।

1) अगर ज़मीन बारानी हो यानी बारिश या नदी व नहर के मुफ्त पानी से सैराब होती है तो पैदावार में उशर यानी दसवां हिस्सा ज़कात में देना फर्ज़ है।

2) अगर ज़मीन को ट्यूबवेल वगैरह से सैराब किया जाता है तो निस्फ उशर (पांच फीसद) यानी बीसवां हिस्सा ज़कात में देना फर्ज़ है।

खुलासा कलाम यह है कि अगर मुफ्त से सैराब हो कर पैदावार हुई तो दसवां हिस्सा (दस फीसद) वरना बीसवां हिस्सा (पांच फीसद)।

अगर ज़मीन दोनों पानी (बारिश वगैरह और ट्यूबवेल) से सैराब हुई है तो अक्सरियत का एतेबार होगा।

फुकहा की इस्तेलाह में दोनों किस्म पर आयद होने वाली ज़कात को उशर ही के उनवान से ताबीर किया जाता है।

निसाबे उशर

कुरान व हदीस के उमूम की वजह से इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक उशर के लिए कोई निसाब ज़रूरी नहीं है, बल्कि हर पैदावार पर ज़कात वाजिब है चाहे पैदावार कम हो या ज़्यादा,

यानी उशर में ज़कात की तरह कोई निसाब ज़रूरी नहीं कि जिससे कम होने पर उशर साकित हो जाए। इसी तरह इमाम अबू हनीफा की राय में फलों, सब्जियों और तरकारियों पर भी ज़कात (उशर या निस्फ उशर) वाजिब है। दूसरे अईम्मा और इमाम मोहम्मद व इमाम यूसुफ रहमतुल्लाह अलैहिम के नज़दीक (लैस फीमा दून खमसतु औसकिन सदकतुन) की रौशनी में पांच वसक (छः कुंठल और 53 किलो) से अगर कम पैदावार हो तो ऐसे लोगों पर उशर वाजिब नहीं है। यानी अगर छः कुंठल और 53 किलो से कम गेहूं पैदा हो तो उस पर उशर वाजिब नहीं।

उशर और ज़कात में फर्क

पैदावार की ज़कात (उशर या निस्फ उशर) हर पैदावार पर दी जाएगी, चाहे साल में एक से ज्यादा पैदावार हुई, यानी एक से ज्यादा मरतबा पैदावार हुई है तो हर मरतबा उशर या निस्फ उशर दिया जाएगा। माल या सोने की ज़कात के वुजूब के लिए ज़रूरी है कि वह ज़रूरियात से बचा हुआ हो, निसाब को पहुंचा हुआ हो और उस पर एक साल गुज़र गया हो, लेकिन पैदावार की ज़कात के लिए यह तमाम शर्त ज़रूरी नहीं हैं। गरज़ ये कि माल या सोने व चांदी पर साल में एक बार ज़कात वाजिब होती है, जबकि साल में दो पैदावार होने पर दो मरतबा ज़कात अदा की जाएगी।

पैदावार पर ज़कात की अदाएगी के बाद अगर गल्ला कई साल तक भी रखा रहे तो उस पर दोबारा ज़कात ज़रूरी नहीं है, हां अगर गल्ला बेच दिया गया तो उससे हासिल शुदा माल पर एक साल गुज़रने और निसाब को पहुंचने पर ज़कात वाजिब होगी।

खेत की ज़मीन पर कोई ज़कात वाजिब नहीं होती है चाहे जितनी कीमत की हो।

बटाई की ज़मीन का उशर

जिसके हिस्से में जितनी पैदावार आएगी उसके मुताबिक उसकी ज़कात (उशर या निस्फ उशर) अदा करना ज़रूरी है, मसलन ज़मीन मालिक और खेती करने वाले के दरमियान आधी आधी पैदावार तकसीम हुई तो दोनों को हासिल शुदा पैदावार पर ज़कात अदा करना ज़रूरी है।

कटाई का खर्च और उशर

पैदावार की ज़कात तमाम पैदावार से निकाली जाएगी, इसमें कच्ची वगैरह के मसारिफ शामिल नहीं किए जाते हैं, मसलन सौ कुंटल गेहूं पैदा हुए, पांच कुंटल गेहूं कटाई में और कुंटल घाहने (शेशर) में दे दिया गया तो 58 कुंटल पर नहीं बल्कि पूरी पैदावार यानी सौ कुंटल पर ज़कात अदा करनी होगी।

मुतफरिक् मसाइल

— पैदावार की ज़कात में जो हिस्सा अदा करना वाजिब है मसलन एक कुंटल गेहूं तो गेहूं के बजाए अगर उसकी कीमत दे दी जाए तो भी जाएज़ है। (शामी)

— अगर रिहाइशी मकान के इर्द गिर्द या उसके सेहन में किसी फल मसलन अमरूद का पेड़ लगाया या मामूली सी खेती कर ली तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं है। (शामी)

— हिन्दुस्तान की जमीनें आम तौर पर उशरी हैं, यानी पैदावार का दस या पांच फीसद मुस्तहिक्कीने ज़कात को अदा करना चाहिए। मौलाना अब्दुस समद रहमानी ने लिखा है कि हिन्दुस्तानी जमीनों

की कुल तेरह सूरतें हैं जिनमें से दस में लख्खस उशर या निस्फ उशर वाजिब होता है और तीन में एतियातन उशर या निस्फ उशर अदा करना चाहिए। (जदीद फिक्रही मसाइल - मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी साहब)

— हिन्दुस्तान की जमीनों में पैदावार पर ज़कात के सिलसिले में बाज़ उलमा का इख्तिलाफ भी है, मगर कुरान करीम आयात व अहादीस के उम्म की वजह से इतियात इसी में है कि हर पैदावार का दस या पांच फीसद ज़कात के हक़दार को अदा किया जाए।

खेती की ज़कात के मुस्तहिक्कीन भी ज़कात के हक़दार की तरह 8 हैं

अल्लाह तआला ने सूरह तौबा आयत 60 में 8 तरह के लोगों को ज़कात लेने का हक़दार बनाया है

- 1) फकीर यानी वह शख्स जिसके पास कुछ थोड़ा माल व असबाब है, लेकिन निसाब के बराबर नहीं।
- 2) मिसकीन यानी वह शख्स जिसके पास कुछ भी न हो।
- 3) जो लोग ज़कात वसूल करने पर मुतअय्यन हैं।
- 4) जिनकी दिलजोई करना मंज़ूर हो।
- 5) वह गुलाम जिसकी आज़ादी मतलूब हो।
- 6) कर्ज़दार यानी वह शख्स जिसके ज़िम्मे लोगों का कर्ज़ हो और उसके पास कर्ज़ से बचा हुआ बक़दरे निसाब कोई माल न हो।
- 7) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला।
- 8) मुसाफिर जो हालते सफर में तंगदस्त हो गया हो।

अल्लाह तआला हमारी जानी व माली तमाम इबादतों को क़बूल फरमाए, आमीन।

अल्लाह तआला हमसे कर्ज़ हसन का मुतालबा करता है

बावजूद कि अल्लाह तआला ही पूरी कायनात का खालिक, मालिक और राजिक है, उसीने हमें और तमाम इंसान और जिन्नात को ऋण दिया है, वही माल देने वाला और माल के ज़रिया दुनियावी ज़रूरतों को पूरा करने वाला है मगर उसका फजल व करम व इहसान है कि माल दे कर वह हमसे मुतालबा करता है कि हम उसको कर्ज़ हसन अदा करें। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की छः आयात में बारह मकामात पर कर्ज़ का ज़िक्र फरमाया है और हर आयत में कर्ज़ को हसन के साथ बयान किया है। इन आयात में अल्लाह तआला ने कर्ज़ हसन के मुक़तलिफ बदले ज़िक्र किए हैं, दुनिया में बेहतरीन बदला, दुनिया व आखिरत में बेहतरीन बदला, आखिरत में अज़ीम बदला, गुनाहों की माफी और जन्नत में दाखिला।

कर्ज़ के मानी काटने के हैं यानी अपने माल में से कुछ माल काट कर अल्लाह तआला के रास्ते में दिया जाए तो अल्लाह तआला इसका कई गुना बदला अता फरमाएगा। मोहताज लोगों की मदद करने से माल में कमी वाके नहीं होती है बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिए जो माल गरीबों, मिसकीनों और ज़रूरत मंदों का दिया जाता है अल्लाह तआला इसमें कई गुना इजाफा फरमाता है कभी जाहिरी तौर पर कभी मानवी व रुहानी तौर पर इसमें बरकत उभार देता है और आखिरत में तो यकीनन इसमें हैरान कुन इजाफा होगा। हसन के मानी बेहतर, खुबसूरत और अच्छे के हैं। कर्ज़ हसन से मुतअल्लिक 6 आयाते कुरानिया हसबे जैल हैं।

कौन शख्स है जो अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दे ताकि उसे कई गुना बढ़ा चढ़ा कर वापस करे, माल का घटाना और बढ़ाना सब अल्लाह ही के इख्तियार में है और इसी की तरफ तुम्हें पलट कर जाना है। (सूरह बकरह 245) और तुम अल्लाह तआला की कर्ज़ हसन देते रहे तो यकीन रखो कि मैं तुम्हारी बुराईयों तुम से दूर कर दूंगा और तुम्हें ऐसी जिन्नतों में दाखिल करूंगा जिनके नीचे नहरे बहती होंगी। (सूरह माइदा 12) कौन शख्स है जो अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दे ताकि अल्लाह तआला उसे बढ़ा चढ़ा कर वापस करे। और उसके लिए बेहतरीन अजर है। (सूरह हदीद 11) मर्द और औरत में से जो लोग सदकात देने वाले हैं और जिन्होंने अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दिया है उनको यकीनन कई गुना बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए बेहतरीन अजर है। (सूरह हदीद 18) अगर तुम अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दो तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फरमाएगा। अल्लाह तआला बड़ा कदरदाँ और बर्दबार है। (सूरह तगाबून 17) और अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दो जो कुछ नेक आमाल तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे वही ज़्यादा बेहतर है और इसका अजर बहुत बड़ा है। (सूरह मुजम्मिल 20)

कर्ज़ हसन से क्या मुराद है?

कुरान करीम में इस्तेमाल हुई इस्तिलाह (कर्ज़ हसन) से अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करना, गरीबों और मोहताजों की मदद करना, यतीमों और बेवाओं की क़िफ़ालत करना, मुकर्रूज़ीन के कर्ज़ की अदाएगी करना, नीज़ अपने बच्चों पर खर्च करना मुराद है गरज़

ये कि इंसानियत के काम आने वाली तमाम शकलें इसमें दाखिल हैं जैसा कि मुफस्सेरीन कुरान ने अपनी तफसीरों में लिखा है। इसी तरह कर्ज़ हसन में यह शकल भी दाखिल है कि किसी परेशान हाल शख्स को इस नियत के साथ कर्ज़ दिया जाए कि अगर वह अपनी परेशानियों की वजह से वापस न कर सका तो उससे मुतालबा नहीं किया जाएगा।

अल्लाह ने बन्दों की ज़रूरत में खर्च करने को कर्ज़ हसन से क्यों ताबीर किया?

अल्लाह तआला ने मोहताज बन्दों की ज़रूरतों में खर्च करने को अल्लाह तआला को कर्ज़ देना करार दिया, हालांकि अल्लाह तआला बेनियाज है वह न सिर्फ माल व दौलत और सारी ज़रूरतों का पैदा करने वाला है बल्कि वह तो पूरी कायनात का खालिक, मालिक और राजिक है, हम सब उसी के खजाने से खा पी रहे हैं ताकि हम बढ़ चढ़ कर इंसानों के काम आएँ, यतीम बच्चों और बेवा औरतों की किफालत करें, गरीब मोहताजों के लिए रोटी कपड़ा और मकान 'क इतिज़ाम के साथ उनकी दीनी व असरी तालिमी ज़रूरतों को पूरा करने में एक दूसरे से मुसाबकत करें, जिसकी वजह से अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को माफ़ फरमाए, दोनों जहाँ में उसका बेहतरीन बदला अता फरमाए और अपने मेहमान खाना जन्नतुल फिदौस में मकाम अता फरमाए, आमीन।

हज़रत अबुल दहदा रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़या

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब क़र्ज़ हसन से मुस्नाअल्लिक आयत कुरान करीम में नाज़िल हुई तो हज़रत अबुल दहदा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! क्या अल्लाह तआला हमसे क़र्ज़ तलब फरमाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हां। वह अर्ज़ करने लगे अपना दस्ते मुबारक मुझे पकड़वा दीजिए (ताकि मैं आप के दस्ते मुबारक पर एक अहद करूं)। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ बढ़ा दिया। हज़रत अबुल दहदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुआहिदा के तौर पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हाथ पकड़ कर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैंने अपना बाग अपने अल्लाह को क़र्ज़ दे दिया। उनके बाग में खज़ूर के 600 दरखत थे और इसी बाग में उनके बीवी बच्चे रहते थे। यहां से उठ कर अपने बाग गए और अपनी बीवी उम्मुद दुहदा से आवाज़ दे कर कहा चलो इस बाग से निकल चलो, यह बाग मैंने अपने रब को क़र्ज़ दे दिया। (तफसीर इब्ने कसीर) यह है वह कीमती सौदा जो हज़रत अबुल दहदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया, उनके पास दो बाग थे उनमें से एक बाग बहुत कीमती था जिसमें खज़ूर के 600 दरखत थे जिसको वह बहुत पसंद करते थे और इसी में वह और उनके बच्चे रहते थे लेकिन मज़क़्रा आयत के नज़ूल के बाद यह कीमती बाग ज़रूरत मंद लोगों के लिए अल्लाह तआला को क़र्ज़ दे दिया। ऐसे ही लोगों की तारीफ में अल्लाह तआला ने अपने कलाम में इरशाद

फरमाया "अपने ऊपर दूसरों को तरजीह देते हैं चाहे खुद उनको कितनी ही सख्त ज़रूरत हो।" (सूरह हशर 9)

कर्ज़ हसन और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने की फज़ीलत

मज़क़ूरा तफ़सील से मालूम हुआ कि कर्ज़ हसन से मुआद अल्लाह तआला की खुशनूदी के लिए बन्दों की मदद करना है यानी अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करना है लिहाज़ा अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करने के चंद फज़ाइल लिखे हैं। जो लोग अपना माल अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करते हैं उसकी मिसाल उस दाने जैसी है जिसमें सात बालियां निकलें और हर बाली में सौ दाने हों और अल्लाह तआला जिसको चाहे बढ़ा चढ़ा कर दे और अल्लाह तआला कुशादगी वाला और इल्म वाला है। (सूरह बक्रह 261) उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह तआला की रज़ामंदी की तलब में दिल की खुशी और यक़ीन के साथ खर्च करते हैं उस बाग जैसी है जो ऊंची ज़मीन पर हो और जोरदार बारिश उसपर बरसे और वह अपना फल दो गुना लावे और अगर उसपर बारिश न भी बरसे तो फौवारा ही काफी है और अल्लाह तआला तुम्हारे काम देख रहा है। (सूरह बक्रह 265) जिस कदर खुलूस के साथ हम अल्लाह तआला के रास्ते में माल खर्च करेंगे उतना ही अल्लाह तआला की तरफ से उसका अजर व सवाब ज़्यादा होगा। एक रुपय भी अगर अल्लाह तआला की खुशनूदी के लिए किसी मोहताज को दिया जाएगा तो अल्लाह तआला 700 गुना बल्कि उससे भी ज़्यादा सवाब देगा। मज़क़ूरा आयात के आखिर में अल्लाह तआला की दो सिफात ज़िक्र

की गई है, वसी और अलीम यानी उसका हाथ तंग नहीं है कि जितने अजर का अमल मुस्तहिक है वह ही दे बल्कि उससे भी ज्यादा देगा। दूसरे यह कि वह अलीम है कि जो कुछ खर्च किया जाता है और जिस ज़ब्बा से किया जाता है उससे बेखबर नहीं है बल्कि उसका अजर ज़रूर देगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं और यतीम की किफालत करने वाला दोनों जन्नत में इस तरह होंगे जैसे दो अंगूलियां आपस में मिली हुई होती हैं। (बुखारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मिसकीन और बेवा औरत की मदद करने वाला अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है। (बुखारी व मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स किसी मुसलमान को ज़रूरत के वक़्त कपड़ा पहनाएगा अल्लाह तआला उसको जन्नत के सब्ज लिबास पहनाएगा। जो शख्स किसी मुसलमान को भुक की हालत में कुछ खिलाएगा अल्लाह तआला उसको जन्नत के फल खिलाएगा। जो शख्स किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाएगा अल्लाह तआला उसको जन्नत की ऐसी शराब पिलाएगा जिस पर वह महर लगी हुई होगी। (अब् दाउद, तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हें अपने कमजोर के तुफ़ैल से रिज़क दिया जाता है और तुम्हारी मदद की जाती है। (बुखारी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सदाक करने से माल में कमी नहीं होती है। (मुस्लिम)

जिन हज़रात को क़र्ज़ हसन और सदकात दिए जा सकते हैं उनमें से बाज़ यह हैं गरीब रिशतेदार, यतीम, बेवा, फकीर, मिसकीन, स्ख़ल, क़र्ज़दार यानी वह शख्स जिसके जिम्मा लोगों का क़र्ज़ हो और वह मुसाफिर जो हालते सफर में तंगदस्त हो गया हो जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है जो माल से मोहब्बत करने के बावजूद रिशतेदारों, यतीमों, मिसकीनों, मुसाफिरों और सवाल करने वाले को दे। (सूरह बक्रह 177) उनके माल में मांगने वाले महरूम का हक़ है। (सूरह जारियात 19)

क़र्ज़ हसन और अल्लाह के रास्ता में पसंदीदा चीज़ें खर्च करें

जब तक तुम अपनी पसंदीदा चीज़ अल्लाह तआला की राह में खर्च नहीं करोगे हरगिज़ भलाई नहीं पाओगे। (सूरह आले इमरान 92) ऐ इमान वालो! अपनी पाकिज़ा कमाई में से खर्च करो। (सूरह बक्रह 267) जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने महबूब चीज़ के खर्च करने का ज़िक्र फरमाया है और मुझे सारी चीज़ों में अपना बाग (बीरे हा) सबसे ज़्यादा महबूब है, मैं उसको अल्लाह के लिए सदका करता हूँ और उसके अजर व सवाब की अल्लाह तआला से उम्मीद रखता हूँ। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ तल्हा! तुमने बहुत ही नफा का सौदा किया। एक दूसरी हदीस में है कि हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरा बाग जो इतनी मालियत का है वह सदका है और

अगर मैं उसकी ताकत रखता कि किसी को उसकी खबर न हो तो ऐसा ही करता मगर यह ऐसी चीज नहीं है जो मखफी रह सके।
(तफसीर इब्ने कसीर)

इस आयत के नाज़िल होने के बाद हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और कहा कि मुझे अपने तमाम माल में सबसे ज़्यादा पसंदीदा माल खैबर की ज़मीन का हिस्सा है, मैं उसे अल्लाह ताला की राह में देना चाहता हूँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसे फक्फ कर दो। असल रोक लो और फल वगैरह अल्लाह की राह में दे दो। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत मोहम्मद बिन मुनकिदर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत जैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक घोड़ा जो उनको अपनी सारी चीज़ों में सबसे ज़्यादा महबूब था। (उस ज़माना में घोड़े की हैसियत तक़रीबन वही थी जो उस ज़माना में गाड़ी की है) वह उसको लेकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह सदका है, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़बूल फरमा लिया और लेकर उनके साहबज़ादा हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दिया। हज़रत जैद रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरा पर कुछ गिरानी के आसार ज़ाहिर हुए (कि घर में ही रहा, बाप के बजाए बेटे का हो गया) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा सदका क़बूल कर लिया, अब चाहे इसको तुम्हारे बेटे को दूं या किसी और रिश्तेदार को या अजनबी को। गरज़ ये कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद

सहाबए किराम की एक जमाअत ने अपनी अपनी महबूब चीजें अल्लाह तआला के रास्ते में दीं, जिनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़रूरतमंद लोगों के दरमियान तकसीम कीं।

(वज़ाहत) सहाबए किराम की तरबियत खुद हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाई थी और उनका ईमान और तवक्कुल कामिल था, लिहाज़ा उनके लिए अपनी पसंदीदा चीजों का अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करना बहुत आसान था जैसा कि सहाबए किराम के वाक्यात तारीखी किताबों में महफूज़ हैं। जंगे खैबर के मौका पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु का अपना सारा सामान अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करना, हज़रत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु का हर ज़रूरत के वक़्त अपने माल के वाफिर हिस्सा को अल्लाह तआला की खुशनूदी हासिल करने के लिए खर्च करना वगैरह वगैरह। आज हम ईमान व अमल के एतेबार से कमजोर हैं और हम "लन तनाल्ल आखिर तक" का मिसदाक बज़ाहिर बन सकते हैं तो कम से कम "या ऐयहल्लजीन आमनुन आखिर तक" पर अमल करके अपनी रोजी सिर्फ हलाल तरीका से हासिल करने पर इकतिफा करें और इसी हलाल रिज़क में से अल्लाह तआला की खुशनूदी के लिए ज़रूरतमंद लोगों पर खर्च करें।

क़र्ज़ हसन या अल्लाह के रास्ते में खर्च को बरबाद करने वाले असबाब

अल्लाह तआला की रज़ा का हुसूल मतलूब न हो बल्कि रिया यानी शोहरत मतलूब हो या इहसान जताना मकसूद हो। इसी तरह क़र्ज़ हसन या सदका दे कर लेने वाले को ताना वगैरह दे कर तकलिफ

पहुँचाई जाए। लिहाज़ा सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए किसी की मदद की जाए जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया "ऐ ईमान वालो! अपनी ख़ैरातको इहसान जता कर और ईजा पहुँचा कर बरबाद नह करो, जिस तरह वह शख्स जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए खर्च करे। (सूरह बकरह 264) जो लोग अपना माल अल्लाह तआला की राह में खर्च करते हैं फिर उसके बाद न तो इहसान जताते हैं न ईजा देते हैं उनका अजर उनके रब के पास है, उनपर न तो कुछ खौफ है न वह उदास होंगे। (सूरह बकरह 262) उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह तआला की रज़ामंदी की तलब में दिल की खुशी से खर्च करते हैं। (सूरह बकरह 265)

तंगदस्ती और हाजत के वक़्त में भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करें

क़र्ज़ हसन या सदकात के लिए ज़रूरी नहीं है कि हम बड़ी रकमही खर्च करें या इसी वक़्त लोगों की मदद करें जब हमारे पास दुनियावी मसाइल बिल्कुल ही न हों बल्कि तंगदस्ती के दिनों में भी हसबे इस्तिताअत लोगों की मदद करने में हमें कोशां रहना चाहिए"स्म कि अल्लाह तआला फरमाता है जो महज खुशहाली में ही नहीं बल्कि तंगदस्ती के मौक़ा पर भी खर्च करते हैं उनके रब की तरफ से उसके बदला में गुनाहों की माफी है और ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरे बहती हैं। (सूरह आले इमरान 134) जो माल से मोहब्बत करने के बावजूद रिशतेदारों, यतीमों, मिसकीनों, मुसाफिरों और सवाल करने वाले को दे। मुफस्सेरीन ने लिखा है कि माल की मोहब्बत से मुराद माल की ज़रूरत है। यानी हमें माल की ज़रूरत है, उसके बावजूद हम

दूसरों की मदद के लिए कोशां हैं। (सूरह बकरह 177) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सबसे बेहतर सदका के मुतअल्लिक सवाल किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया इस हाल में भी खर्च करो किुम्मा सही सालिम हो और ज़िन्दगी की उम्मीद भी हो, अपने गरीब हो जाने का डर और अपने मालदार होने की तमन्ना भी हो। यानी तुम अपनी ज़रूरतों के साथ दूसरों की ज़रूरतों का पूरा करने की फ़िक्र करो। (बुखारी, मुस्लिम)

खुलासा बहस

अल्लाह तआला ने माल व दौलत को इंसान की ऐसी दुनियावी ज़रूरत बनाई है कि अमूमन इसके बेगैर इंसान की ज़िन्दगी दो भर रहती है। माल व दौलत के हुसूल के लिए अल्लाह तआला ने इंसान को जाएज़ कोशिशें करने का मुकल्लफ तो बनाया है मगर इंसान की जद्दु व जिहद और दौड़ व धूप के बावजूद उसकी अता अल्लाह तआला ने अपने इख्तियार में रखी है चाहे तो वह किसी के रिज़्क में कुशादगी कर दे और चाहे तो किसी के रिज़्क में तमाम दुनियावी असबाब के बावजूद तंगी पैदा कर दे।

माल व दौलत के हुसूल के लिए इंसान को खालिके कायनात ने यूँही आजाद नहीं छोड़ दिया कि जैसे चाहो कमाओ खाओ। बल्कि उसके उसूल व जवाबित बनाए ताकि इस दुनियावी ज़िन्दगी का निज़ाम भी सही चल सके और उसके मुताबिक आखिरत में जजा व सजा का फैसला हो सके। इन्हीं उसूल व जवाबित को शरीअत कहा जाता है जिसमें इंसान को यह रहनुमाई भी दी जाती है कि माल किस तरह कमाया जाए और कहा कहां खर्च किया जाए।

अपने और बाल बच्चों के अखराजात के बाद शरायत पाए जाने पर माल व दौलत में ज़कात की अदाएगी फर्ज़ की गई है। इस्लाम ने ज़कात के अलावा भी मुख्तलिफ़ शकलों से मोहताज लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने की तर्गीब दी है ताकि जिस मुआशरा में हम रह हैं उसमें एकसूत्रे के रंज व गम में शरीक हो सकें। उन्हीं शकलों में एक शकल कर्ज़ हसन भी है कि हम गरीबों और मोहताजों की मदद करें, यतीमों और बेवाओं की किफालत करें, मकरूजीन के कर्ज़ की अदाएगी करें और आपस में एक दूसरे को ज़रूरत के वक़्त कर्ज़ हसन भी दें ताकि अल्लाह तआला दुनिया में भी हमारे माल में इजाफा करे और आखिरत में भी इसका अजर व सवाब दे।

इस फानी दुनियावी ज़िन्दगी का असल मतलूब व मकसूद उखरवी ज़िन्दगी में कामयाबी हासिल करना है, जहां हमेशा हमेशा रहम है मौत को भी वहां मौत आ जाएगी और जहां की कामयाबी हमेशा की कामयाबी व कामरानी है। लिहाज़ा हम अल्लाह तआला के अहकामात नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीका पर बजा लाएँ। सिर्फ़ हलाल रिज़क़ पर इकतिफा करें खाह बज़ाहिर कम ही क्यों न हो। हत्तल इमकान मुशतबह चीजों से बचें। ज़कात के वाजिब होने की सूरत में ज़कात की अदाएगी करें। अपने और बाल बच्चों के अखराजात के साथ वक़्तन फवक़्तन कर्ज़ हसन और मुख्तलिफ़ सदकात के ज़रिया मोहताज लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने की कोशिश करें। इस बात का हमेशा ख्याल रखें कि कल क़यामत के दिन हमारे क़दम हमारे परवरदिगार के सामने से हट नहीं सकते जब तक कि हम माल के मुतअल्लिक़ सवाला का जवाब न दे दें कि कहां से कमाया और कहां खर्च किया।

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी का तअल्लुक सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तकरीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाई।

डाक्टर नजीब कासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी को “अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी” यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में **डाक्टरेट की डिग्री** से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअकिद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौजूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में ख़ूब तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

najeebqasmi@gmail.com

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS



IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، جی علی الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، تحفہ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دواہم ماخذ، سیرت النبی صلی اللہ علیہ وسلم کے چند پہلو،
زکوٰۃ وصدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم و ذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

کوران اور ہدیس - اسلامی آئیڈیالوجی کے مین سورس
سیرت النبی کے مختلف پہلو
نماز کے لیے آؤ، کامیابی کے لیے آؤ
رمضان - اللہ کا ایک تحفہ
زکات اور صدقات کے بارے میں گائیڈ
حج اور عمرہ گائیڈ
مختصر حج گائیڈ
عمرہ کا طریقہ
پارہائیکہ معاملے کوران اور ہدیس کی روشنی میں
لوگوں کے حقوق اور ان کے کامیابی
مہتممपूर्ण व्यक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र



First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng. & Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM

HAJJ-E-MABROOR